बी-151, महाराना प्रताप एन्कलेव,
पीतमपुरा, दिल्ली-34.

प्रिय डॉ॰ बुलाकर जी,
2-11-04

इस महीने की 'वीणा' पत्रिका में आपका लेख 'प्रेमचंद के साहित्य में पिछड़े वर्ग की पीड़ा' पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। आजकल उनके उपन्यास 'रंगभूमि' को लेकर दलित वर्ग के एक भाग ने जो आंदोलन छेड़ा है, उसको आपने अच्छा जवाब दिया। 'रंगभूमि' को लेकर मैंने बहुत पहले एक लम्बा लेख लिखा था। समय-समय पर मैंने उनकी बहुत रचनाओं पर लेख लिखे हैं। बहुत सी कहानियों का रेडियो रूपांतरण भी मैंने किया है। वैसे दलित वर्ग को सबकुछ कहने का अधिकार है। युगों से हम उन पर अत्याचार करते आए हैं। समय आने पर आपत्ति का तथा-कथित वर्ग स्वयं समझ जाएगा।

जो भी हो आपका लेख बहुत अच्छा है।

आशा है शोध संबंधी आपकी समस्याएं सुलझ गई होंगी। इधर मेरा स्वास्थ्य कुछ सही नहीं रहता, आयु का योग है। सबको मेरा यथायोग्य कहिए। आपका

विष्णु प्रभाकर